॥ ॐ ॥ वन्दे श्री गुरु तारणम् ॥

श्री १००८ श्री तारण तरण मंडलाचार्य विरचित

विचार-मत

[पंडित पूजा, माला रोहण, कमल बत्तीसी]

पद्यानुवादक—

समाज रत्न श्रीमान् पूज्यवर पंडित, ब्रह्मचारी

जयकुमारजी

प्रकाशक—

श्रीमान् दानवीर, सवाई सिंघई

हीरालाल नोखेलालजी सिंघोड़ी (छिन्दवाड़ा)

प्रथमवार १०००

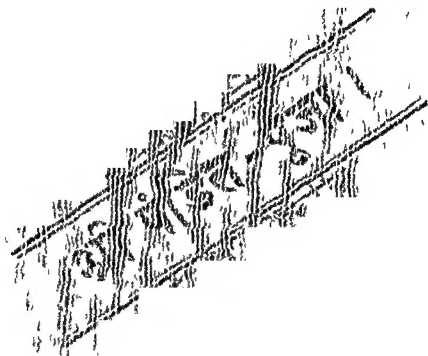
श्री तारण सं० ४२३

मूल्य सद्विचार

निवेदन—

समाज में भ्रमण करने के कारण समय न मिलने से
हम इस ग्रंथ का विशेष संशोधनादि कार्य
बिलकुल न कर सके। अतएव
बहुतसी त्रुटियों का होना संभव है।
पाठकों से क्षमा प्रार्थना करते हुये,
निवेदन करते है कि इस में
हमारी अल्पज्ञता वश
जो भी त्रुटियां हों
सुधार कर
अनुगृहीत
करें।

—ब्र० जय



॥ वन्दे श्री गुरु तारणम् ॥

श्री १००८ श्री परम गुरु तारण तरणाचार्य विरचित -

पंडित - पूजा



❀ मंगलाचरण ❀

ॐकारस्य ऊर्धस्य, उर्ध्व सद्भाव शाश्वत ।
विन्दस्थानेन तिष्ठन्ति, ज्ञान मयं शाश्वत ध्रुवं ॥ १ ॥



शुद्धातम का प्रबोध कर्ता,
ओं पद ब्रह्माक्षर गाया ।
वह पद शुद्ध ऊर्ध्व गामी का,
शिवपुर ठाम अचल गाया ॥

विन्दस्थान कहें उसको ही,
वहीं रहे यह चेतनराय ।
जिनकी ज्ञानमयी शुभ संपद,
अक्षय रूप रही निजमाय ॥१॥

* शुद्धात्मा को नमस्कार *



नय निश्चय जानन्ते, शुद्ध तत्व विधीयते ।
ममात्मा गुणं शुद्धं, नमस्कारं शाश्वतं ध्रुवं ॥ २ ॥



जो नर निश्चय नय को जाने,
वही तत्व को पहिचाने ।
निज आतम ही शुद्ध गुणोंकर,
युक्त यही निश्चय माने ॥

ऐसे शुद्ध निजातम को,
निज अनुभव में लावो प्राणी ।
वही शाश्वता रूप अटल है,
नमस्कार करते ज्ञानी ॥ २ ॥



❀ परम इष्ट ❀



इष्ट च परम इष्ट,
इष्ट अन्मोय वित्त अनिष्टं
पर परजाव विलिय
ज्ञान सहावेन कम जिनय च



परमोत्कृष्ट इष्ट सुख मय,
परमातम पद अनुभव करन
अनिष्ट पर पर्जाय त्याग निज,
ज्ञान सम्पदा दृढ धरन

सिद्धि संपदा मिलती ऐसे,
भावो से निश्चय धरन
श्री जिन तारण तरण गुरू का,

* ह्रींकार - पूजा *



ह्रींकार ज्ञान उत्पन्नं, उवंकारं च वन्द्यते ।
अर्हं सर्वज्ञ उक्तं च, अचक्षु दर्शन दृश्यते ॥ ४ ॥



ह्रींपद से चौवीसों जिनवर,
अनुभव में आजाते हैं ।
ओंकार से शुद्ध रूप वा,
पंच परम पद भाते हैं ॥

नमस्कार है शुद्ध रूप को,
जो जिनवर ने गाया है ।
चर्म चक्षु से नहिं दीखे जो,
अचक्षु मनमें भाया है ॥ ४ ॥



* ज्ञान-पूजा *



मति श्रुतस्य सम्पूर्णं, ज्ञान पंच मयं ध्रुवं।
पंडितो सोऽपि जानन्ते, ज्ञान शास्त्र संपूज्यते ॥ ५॥



मति श्रुत अवधि ज्ञान मनपर्जय,
केवल ज्ञान अचल जो हैं।
पंडित जन इन ज्ञानों को,
निज अनुभव में जाने शोभें ॥

यही ज्ञान मय शास्त्र जिनेश्वर,
वाणी की पूजा कहिये।
इस सम्यक् पूजा को निशदिन,
भविजन तुम करते रहिए ॥ ५ ॥



* देव - शास्त्र - गुरु - पूजा *



ऊवं ह्रियं श्रियंकारं, दर्शनं च ज्ञानं ध्रुवं ।
देवं श्रुतं गुरुं चरणं, धर्म सद्भाव शाश्वतं ॥ ६ ॥



ऊवंकार ह्रींकार तथा श्रींकार,
यही पद उत्तम है ।
सम्यग्दर्शन तथा अटल निज,
सम्यग्ज्ञान सदुत्तम है ॥

सच्चे देव शास्त्र गुरु के,
चरणों में निशदिन ही रहना ।
सच्चे शाश्वत दयामयी,
जिन धर्म मार्ग को ही गहना ॥ ६ ॥



* पंडित कैसे हों ? *



वीर्यं अकुरणं शुद्ध, त्रैलोक लोकित ध्रुव ।
रत्नत्रय मय शुद्धं, पण्डितो गुण पूज्यते ॥ ७ ॥



आत्म शक्ति का शुद्ध वीर्य,
जिनने निजमें अंकुरित किया ।
तीन लोक को देखा उनने,
रहा नहीं संकुचित हिया ॥

रत्नत्रय से शुद्ध होय जो,
पण्डित जन गुण के सागर ।
वही पूज्य गुण युक्त कहावे,
जाय शीघ्र शिव वनिता घर ॥ ७ ॥



❋ ज्ञान - स्नान ❋



देवं श्रुतं गुरुं वन्दे, धर्मं शुद्धं च वन्द्यते ।
ति अर्थं अर्थं लोकं च, स्नानं च शुद्धं जलं ॥ ८ ॥



देव शास्त्र गुरु को वन्दू मैं,
तथा धर्म को नमन करूं ।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित यह,
तीन अर्थ नित मनन करूं ॥

यही शुद्ध जल है जिसमें,
नित न्हवन करो भविजन ज्ञानी ।
तब होगा संसार पार यह–
ही हमने निश्चय जानी ॥ ८ ॥



* ज्ञान-स्नान *



चेतना लक्षणो धर्मो, चेतयति सदा बुधै ।
ध्यानस्य जल शुद्ध, ज्ञान स्नान पंडित ॥ ६ ॥



चेतन के लक्षण कर मंडित,
शुद्ध धर्म को कहते हैं ।
जिससे नितही बुद्धिमान जन,
सावधान सब रहते हैं ॥

शुद्ध ध्यान मय जल पवित्र है,
ज्ञानीजन स्नान करो ।
जिससे यह संसार भवोदधि,
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ ६ ॥



❀ ज्ञान - स्नान ❀



शुद्ध तत्वं च वेदन्ते, त्रिभुवनं ज्ञानेश्वरम् ।
ज्ञानं मयं जलं शुद्धं, स्नानं ज्ञान पण्डितः ॥ १० ॥



शुद्ध तत्व को जाना उनने,
जो त्रिभुवन के ईश हुये ।
ज्ञान मयी जल में स्नान कर,
वे प्रभुवर शुभ शुद्ध हुये ॥

शुद्ध ज्ञान मय जल पवित्र है,
ज्ञानीजन स्नान करो ।
जिससे यह संसार भवोदधि,
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥१०॥



* ज्ञान - सरोवर *



सम्यक्त्वस्य जलं शुद्ध, सम्पूर्णं सर पूरितं ।
स्नानं पिवति गणधरणं, ज्ञानं शरणंत ध्रुव ॥ ११ ॥



सम्यक्दर्शन जल पवित्र,
सम्पूर्ण रूप से रस पूरित ।
जिस निज आतम सरवर में,
है भरा स्वाद रस मय पूरित ॥

गणधर देवो ने उस जल में,
न्हवन किया वा पान किया ।
उस जल का ही शरण गहो,
तुम जो चाहो संतोष लिया ॥ ११ ॥



* ज्ञान-स्नान *



शुद्धात्मा चेतना नित्यं, शुद्ध दृष्टि समं ध्रुवं ।
शुद्ध भाव स्थिरी भूतं, ज्ञानं स्नान पण्डितः ॥ १२ ॥



शुद्ध आतमा का चिन्तन कर,
शुद्ध दृष्टि निज में करलो ।
शुद्ध भावसे स्थिर होकर,
ज्ञान जलधि निजमें भरलो ॥

शुद्ध ज्ञान मय जल पवित्र है,
ज्ञानी जन स्नान करो ।
जिससे यह संसार भवोदधि,
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ १२ ॥



* आत्म देव का प्रक्षालन *



प्रक्षालितं त्रति मिथ्यातं, शल्य त्रयं निकंदनं।
कुज्ञान राग दोष च, प्रक्षालितं असुह भावना ॥ १३ ॥



निज आतम से धो डालो
मिथ्यात शल्य त्रय हे ज्ञाता।
खोटा ज्ञान अरु राग द्वेष को,
तथा भावना दुख दाता ॥

शुद्ध ज्ञान मय जल पवित्र है,
ज्ञानीजन स्नान करो।
जिससे यह संसार भवोदधि,
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ १३ ॥

* आत्मदेव का प्रक्षालन *



कषायं चत्रु अनंतानं, पुण्य पाप प्रक्षालितं ।
प्रक्षालितं कर्म दुष्टं च, ज्ञानं स्नान पंडितः ॥ १४ ॥



चार चौकड़ी कषाय की है,
तथा पुण्य वा पापों को ।
प्रक्षालन कर शुद्ध होय,
फिर दूर करो संतापों को ॥

प्रक्षालन कर दुष्ट कर्म को,
ज्ञान मयी स्नान करो ।
जिससे यह संसार भवोदधि,
मांहि सेति तुम शीघ्र तरो ॥ १४ ॥



* निश्चय नय के वस्त्र *



प्रक्षालितं मन चपल, त्रिविधि कर्म प्रक्षालित ।
पंडितो वस्त्र मयुक्त, आभरण भूषणं क्रियते ॥ १५ ॥



अति चंचल मर्कट सम जो मन,
उसे शुद्ध प्रक्षालन कर ।
द्रव्य कर्म, नो कर्म, भाव मय,
कर्म, इन्हें प्रक्षालन कर ॥

अब आभूषण वस्त्र तुम्हें,
कैसे धारण करना चहिये ।
यह गुरु सीख सुनो हे प्राणी,
भव समुद्र तरना चहिये ॥ १५ ॥



* निश्चय नय के वस्त्राभरण *



वस्त्रं च धर्म सद्भावं, आभरणं रत्नत्रयं।
मुद्रिका सम मुद्रस्य, मुकुटं ज्ञान मयं ध्रुवं ॥ १६ ॥



दश लक्षण जो धर्म बताये,
उनके वस्त्र बना पहरो।
तीन रतन के गहने गढ़कर,
उनको प्रीति सहित पहरो ॥

निज मुद्रा को शांत बनालो,
यही जानलो शुभ मुंदरी।
ज्ञान मुकुट को धारण करके,
बरलाओ तुम शिव सुन्दरी ॥ १६ ॥



* आत्म-दर्शन *



दृष्टित शुद्ध दृष्टि च, मिथ्या दृष्टि च तिक्तय।
असत्य अनृत न दृष्टन्ते, अचेत दृष्टि न दीयते ॥ १७ ॥



जिनने देखी शुद्ध दृष्टि को,
मिथ्य दृष्टि का त्याग किया।
असत्य मिथ्या न देख करके,
शुद्ध रूप पर ध्यान दिया ॥

अचेत कहिये जड़ स्वरूप जो,
वस्तु कोई भी हो जग में।
सम्यक्त्वन्त जीव है सोई,
दृष्टि न देवे उस मग में ॥१७॥



* आत्मदर्शन *



दृष्टितं शुद्ध समयं च, सम्यक्त्वं शुद्धं ध्रुवं ।
ज्ञानं मयं च सम्पूर्ण, ममल दृष्टि सदा बुधैः ॥ १८ ॥



जिसने देखा शुद्ध समय को,
अटल शुद्ध सम्यक्त्व वही ।
ज्ञानमयी है पूर्ण वही है,
विज्ञ वही शुभ दृष्टि वही ॥

शुद्ध समय का अर्थ यही है,
आतम तत्व चेतनासार ।
इसको ध्यावो और छोड़दो,
सबही आडम्बर व्यवहार ॥ १८ ॥



❋ २५ दोष त्याग ❋



लोक मूढ़ं न दृष्टन्ते, देव पाखंडि न दृष्टते ।
अनायतन मदाष्ट च, शंका अष्ट न दृष्टते ॥ १६ ॥



इस गाथा मे समकित के,
पच्चिस दोषो का नाम कहा ।
तीन मूढ़ता अनायतन षट्,
अष्ट मदो का नाम कहा ॥

शंकादिक आठों दोषों को,
सम्यग्दृष्टि न धरते हैं ।
ऐसे इन पच्चिस दोषों से,
भव्यजीव ही डरते हैं ॥१६॥



* आत्म दर्शन *



दृष्टितं शुद्ध पदं सार्ध, दर्शनं मलं विमुक्तयं ।
ज्ञानं मयं शुद्ध सम्यक्त्वं, पण्डितो दृष्टि सदा बुधैः ॥२०॥



उपर्युक्त पच्चिस मल से जो,
रहित आत्म पद का श्रद्धान ।
वही ज्ञानमय शुद्ध कहा,
सम्यक्त्व नाम ताका अभिराम ॥

बुद्धिवान पण्डित पुरुषों की,
दृष्टि उसी पर रहती है ।
वही दृष्टि तुमभी करलो भवि,
यह जिनवाणी कहती है ॥२०॥



* आत्मदर्शी-पुरुष *



वेदकामस्थिरश्चैव, वेदन्ति निर्ग्रंथ ध्रुवम् ।
त्रैलोक्य समय शुद्धं, वेद वेदान्त पण्डित ॥२१॥



ज्ञाताओं मे अग्र बुद्धि,
निर्ग्रंथ दिगम्बर ने जाना ।
तीन लोक मे सार समय जो,
शुद्ध रूप है सुख थाना ॥

वेद और वेदान्तों में सब,
पण्डित जन यों कहते हैं ।
सार समय सम्यक्त्व और,
सब झूठा झगड़ा करते हैं ॥२१॥



* निश्चय पंडित पूजा *



उच्चरणं ऊर्ध शुद्धंच, शुद्ध तत्वंच भावना ।
पण्डितो पूज्य आराध्यं, जिन समयंच पूजितं ॥२२॥



उच्चारण अरु शुद्ध भावना,
शुद्ध तत्व को ही धरना ।
यही पूज्य की पूजा अरु,
आराधन निशदिन ही करना ॥

जिन जीवों को ऐसा यह,
जिनवर का आराधन भाया ।
उनने श्री जिनवर को मानो,
साक्षात में ही पाया ॥२२॥



* निश्चय पूजा *



पूजित च जिन उक्त, पंडितो पूजितो सदा ।
पूजितं शुद्ध मार्ध च, मुक्ति गमन च कारणम् ॥२३॥



जिनवर ने जो कहा शुद्ध,
पूजा पंडित जन नित्य करें ।
इस पूजा से पूजक जन भी,
निज शिव लक्ष्मी को प्राप्त करें ।

इसही पूजा को तुम धारो,
निज स्वरूप का ज्ञान करो ।
छोड़ो जड़ पूजा को प्रियवर,
निश्चय मे शिव गमन करो ॥२३॥



* संसार वर्द्धक जड़ पूजा निषेध *



अदेवं अज्ञान मूढंच· अगुरु अपूज्य पूजितं ।
मिथ्यात्वं सकल जानन्ते, पूजा संसार भाजनं ॥२४॥



अज्ञानी अति मूढ मनुज ही,
अगुरु अदेवों को पूजे ।
यह मिथ्यात्व अनादी से ही,
जग कारण सबको सूझे ॥

जिसमें नहीं देव गुरु का,
लक्षण किंचित पाया जाता ।
वह अदेव अरु अगुरू कहा है,
यही भाव की यह गाथा ॥२४॥



❀ पंडित पूजा ❀

तेनाह पूज शुद्धच, शुद्ध तत्व प्रकाशकं ।
पंडितो वंदना पूजा, मुक्ति गमन न संशय ॥२५॥

तत्व प्रकाशक पूजा की यह,
कथनी इसी लिये की है ।
पण्डित जन हो ! पूजो, वंदो,
पूजा की यह रीती है ॥

इस पूजा से मोक्ष प्राप्त हो,
इसमें नहिं संशय लाना ।
भूल न जाना भव्यजीव,
सब शिव मारग को ही जाना ॥२५॥

* पूज्य पूजक कैसे हों *

प्रति इन्द्रं प्रति पूर्णस्य, शुद्धात्मा शुद्ध भावना ।
शुद्धार्थं शुद्ध समयं च, प्रति इन्द्रं शुद्ध दृष्टितं ॥२६॥

शुद्धात्मा की शुद्ध भावना,
तथा उक्त वस्त्राभूषण ।
धारण कर तुम इन्द्र सदृश हो,
गुण धारो त्यागो दूषण ॥

शुद्ध अर्थ जो शुद्ध समय है,
उसकी पूजन तुम करना ।
तब ही शुद्ध इन्द्र सम हो,
तुम यह निश्चय मनमें धरना ॥२६॥

* पूजक के गुण *



दातारो दान शुद्ध च, पूजा आचरण संयुक्त ।
शुद्ध सम्यक्त्व हृदयस्य, स्थिरं शुभावना ॥२७॥



पूजा शुद्धाचरण आदि से,
जो दाता अति शुद्ध हुआ ।
तथा दान भी शुद्ध और,
सम्यक्त्व हृदय में पूर्ण हुआ ॥

शुद्ध भावना स्थिर मनसे,
सत्पात्रों में दान करो ।
मोक्षमार्ग का कारण है वह,
यह मनमें श्रद्धान धरो ॥२७॥



* सच्चे पूज्य पूजक *



शुद्ध दृष्टी च दृष्टंते, सार्धं ज्ञान मयं ध्रुवं ।
शुद्ध तत्वं च आराध्यं, वंदना पूजा विधीयते ॥२८॥



ज्ञानमयी जो शुद्ध दृष्टि है,
यह पूजा वे ही करते ।
शुद्ध तत्व का आराधन भी,
निज मनमें वे ही धरते ॥

इस पूजा से मोक्ष प्राप्त हो,
इसमें नहिं संशय लाना ।
भूल न जाना भव्यजीव सब,
शिव मारग में ही जाना ॥२८॥



* पंडित पूजा का प्रमाण *



संघस्य चत्रु सघस्य, भावना शुद्धात्मनं ।
समच शरणस्य शुद्धस्य जिन उक्त सार्धं ध्रुव ॥२६॥



समव शरण बारह कोठा में,
चार संघ के मध्य वहां ।
जिनवर ने उपदेश दिया था,
असंख्यात थे जीव तहां ॥

शुद्धात्मा को भावो जीवो !
सदा भावना निज मनमें ।
होगा भव भय दुःख दूर यह,
-सुन हर्षाये सब च्रण में ॥२६॥



* व्यवहार श्रद्धा *



सार्द्धं च सप्त तत्वानं, द्रव्यकाया पदार्थकं ।
चेतना शुद्ध ध्रुवं निश्चय, उक्तंति केवलं जिनं ॥३०॥



सप्त तत्व नव पदार्थ वा,
षट द्रव्यों का श्रद्धान करो ।
निज स्वरूप का निश्चय करके,
शिव नगरी को गमन करो ॥

यह उपदेश जिनेश्वर का है,
इसको धारो हे प्राणी ।
होगा भव भय दूर सभी का,
बन जाना दृढ़ श्रद्धानी ॥३०॥



* हेय उपादेय शिक्षा *



मिथ्या तिक्त तृतीय च, कुज्ञानं अति तिक्तयं ।
शुद्ध भाव शुद्ध समय, सार्ध भव्य लोकय ॥३१॥



मिथ्या प्रकृति तीन अरु तीनों,
कुज्ञानो का त्याग करो ।
शुद्ध भाव से शुद्ध समय का,
भव्यजीव श्रद्धान करो ॥

यह उपदेश जिनेश्वर का है,
इसको धारो हे प्राणी ।
होगा भव भय दूर सभी का,
बन जाना दृढ़ श्रद्धानी ॥३१॥



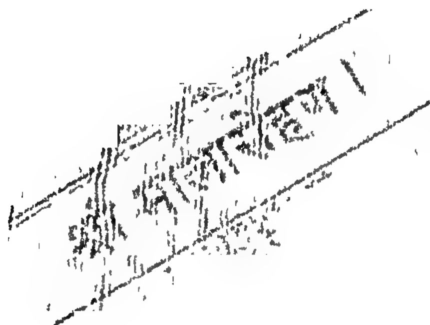
* उपसंहार *

एतत्सम्यक्त्व पूजस्य. पूजा पूज समाचरेत् ।
मुक्ते श्रियं पंथं शुद्धं, व्यवहार निश्चय शाश्वतं ।। ३२।।

यह सम्यक्त्व पूज्य पूजा को,
पूजो हे भविजन प्राणी।
निश्चय वा व्यवहार मार्ग यह,
यही कहे श्री जिनवाणी ।।

बस यह पंडित पूजा की,
बत्तिस गाथा का अर्थ हुआ ।
पढ़ो पढ़ावो शुद्ध करो यह,
ग्रन्थ पूर्ण अरु सार्थ हुआ ।।३२।।

इति



॥ तस्मै श्री गुरवे नम ॥

श्री १००८ श्री परमगुरु तारण तरणाचार्य विरचित

माला रोहण

* भाषा—पद्यानुवाद *



मंगला चरण

ओंकार वेदान्त शुद्धात्म तत्व,
प्रणमामि नित्य तत्वार्थ सार्धं।
ज्ञान मयो सम्यग्दर्शनेत्व,
सम्यक्त्व चरण चैतन्य रूप ॥१॥

ओंकार शुद्धात्म तत्व है,
सब वेदों का सार यही।
नित्य नमूं उस पद को मैं,
धर हृदय बीच श्रद्धान सही॥
ज्ञान मयी सम्यग्दर्शन से,
शोभित है चारित्र मयी।
शुद्ध चेतना के द्विभेद हैं,
दर्शन ज्ञान स्वरूप मयी ॥१॥



❀ महावीर स्वामी को नमस्कार ❀



नमामि भक्तं श्री वीरनाथं,
नंतं चतुष्टं तं व्यक्त रूपं।
माला गुणं वोच्छति तं प्रबोधं,
नमाम्यहं केवलि नंत सिद्धं ॥२॥



भक्ति भाव से वीरनाथ जिन-
वर को वंदन मैं करता।
चार चतुष्टय स्वरूप जिनका,
प्रगट रूप के जो धरता॥

माला रोहण ग्रन्थ भव्य-
जीवों के हित कारण गाऊं।
श्री जिन, केवलि तथा सिद्ध जो,
नंत हुए उनको ध्याऊं ॥२॥



* आत्म-स्वरूप *

काया प्रमाणं त ब्रह्म रूप,
निरंजन चेतन लक्षणेत्व ।
भावे अनेत्वं जे ज्ञान रूपं,
ते शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व वीर्यं ॥३॥

जीव द्रव्य कैसा है इसका,
तुम आकार सुनो भाई ।
अपनी काया के प्रमाण वह,
ब्रह्म रूप निर्मल गाई ॥

चेतन के लक्षण मय इसको,
जो ज्ञानी निजमें भाते ।
वही शुद्ध दृष्टी है जग में,
शुद्ध शक्ति को वे पाते ॥३॥

* सम्यग्दृष्टि - स्वरूप *



संसार दुःखं जे नर विरक्तं,
ते समय शुद्धं जिन उक्त दृष्टं ।
मिथ्यात्व मद मोह रागादि खंडं,
ते शुद्ध दृष्टी तत्त्वार्थ सार्धं ॥४॥



दुःख मयी संसार रूप से,
जो नर विरक्त होते हैं ।
जिनवर कथित शुद्ध चेतन के,
स्वरूप को वे जोते हैं ॥

मिथ्या मद वा मोह राग आदिक,
को खंडन वे करते ।
शुद्ध दृष्टि हैं वही तत्व-
श्रद्धान सदा जो नर धरते ॥४॥



* शुद्ध-स्वरूप *



शल्यं त्रयं चित्त निरोध नेत्वं,
जिन उक्त वाणी हृदि चेत नेत्वं।
मिथ्यात्व देव गुरु धर्म दूरं,
शुद्धं स्वरूपं तत्वार्थ सार्धं ॥४॥



तीन शल्य को दूर करो निज,
हृदय बीच जिन वचन धरो।
मिथ्या देव गुरु को त्यागो,
कुधर्म को तुम दूर करो॥

शुद्ध स्वरूप कहा चेतन का,
उसकी तुम श्रद्धा धरना।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥५॥



सम्यग्दृष्टि-कर्तव्य



सम्यक्त्व शुद्धं हृदयं समस्तं,
तस्य गुणमाला गुथितस्य वीर्यं ।
देवाधि देवं गुरु ग्रन्थ मुक्तं,
धर्म अहिंसा क्षिम उत्तमध्यं ॥८॥



सम्यग्दर्शन शुद्ध हृदय में,
पूर्ण रूप धरना चहिये ।
उसकी गुणमाला को भविजन,
अब गुंथन करना चहिये ॥

जिनवर देव गुरू ग्रंथों से,
रहित होय वह मान्य सही ।
धर्म अहिंसा क्षमा मयी हो,
जिसमें नहीं विरोध कहीं ॥८॥



* शुद्धात्मा को नमस्कार *



तत्वार्थ सार्धं त्व दर्शनेत्व,
मल विमुक्त सम्यक्त्व शुद्ध ।
ज्ञान गुण चरणस्य शुद्धस्य वीर्यं,
नमामि नित्य शुद्धात्म तत्व ॥६॥



पच्चिस मलसे रहित शुद्ध,
सम्यक्त्व तत्व श्रद्धान धरो।
ज्ञान चरित शक्ती के धारी,
चेतन की पहिचान करो ॥

ऐसे शुद्धातम को नितही,
नमस्कार मैं करता हूं।
उस चेतन के शुद्धभाव की,
सदा भावना धरता हूं ॥६॥



* जिनवाणी-महिमा *



जे सप्त तत्वं षद् द्रव्य युक्तं,
पदार्थ काया गुण चेत नेत्वं ।
विश्वं प्रकाशं तत्वानि वेदं,
श्रुत देव देवं शुद्धात्म तत्वं ॥१०॥



सप्त तत्व नव पदार्थ वा षद्-
द्रव्य कहे जिन आगम में ।
इनका प्रकाश जो करता है,
वेद वही परमागम में ॥

ऐसे श्रुत देवाधि देव जो,
जिन वाणी सद् ज्ञान मयी ।
श्री गुरु तारण तरण कहें, यह,
करो शुद्ध श्रद्धान सही ॥१०॥



* माला-गुथन *

देवं गुरु शास्त्र गुणानि नित्य,
सिद्ध गुणं सोलह कारणेत्व ।
धर्मं गुण दर्शन ज्ञान चरण,
मालाय गुथित गुण सस्य रूपं ॥११॥

सच्चे देव शास्त्र गुरु के गुण,
नित्य मनन करना चहिये ।
सिद्धों के गुण तथा भावना-
सोलह चित धरना चहिये ॥

जैन धर्म के गुण सद्दर्शन,
ज्ञान चरण मय भावों को ।
अब गुंथन गुणमाला में,
करते हैं शुद्ध सुभावों को ॥११॥

* माला-गुण *



पड़िमाय ग्यारा तत्वानि पेपं,

व्रत्तानि शीलं तपदान चिन्तं ।

सम्यक्त्व शुद्धं ज्ञानं चरित्रं,

सुदर्शनं शुद्ध मलं विमुक्तं ॥१२॥



ग्यारह पड़िमा नाम प्रतिज्ञा का,

है धारो हे भ्राता ।

शील तथा तपदान व्रतादिक,

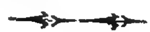
चिन्तन करो मिले साता ॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण,

आचरण सदा करना चहिये ।

पच्चिस मल से रहित शुद्ध,

भावों को अब धरना चहिये ॥१२॥



● सम्यग्दृष्टि-कर्तव्य ●



मूल गुण पालंति जे विशुद्ध,
शुद्ध मयं निर्मल धारयेत्वं।
ज्ञान मय शुद्ध धरति चित्तं,
ते शुद्ध दृष्टी शुद्धात्म तत्व ॥१३॥



अष्टमूल गुण का पालन जो,
करते निर्मल भावों से।
ज्ञानमयी निज शुद्ध दृष्टि,
वे युक्त रहें सद्भावों से॥

आतम शुद्ध करो हो प्राणी,
जिनवाणी में यही कहा।
सम्यग्दर्शन हुआ जिन्हों को,
उनही ने पद मोक्ष लहा॥१३॥



❀ पच्चीस-मल ❀

शंकादि दोषं मद मान मुक्तं,
मूढं त्रयं मिथ्या माया न दृष्टं ।
अज्ञान षट् कर्म मल पंच वसिं,
त्यक्तस्य ज्ञानी मल कर्म मुक्तं ॥१४॥

शंकादिक हैं आठ दोष,
ज्ञानादिक कहे आठ मद हैं ।
तीन मूढ़ता रहित तथा षट्,
अनायतन जो दुखदा हैं ॥

ऐसे यह पच्चिस दोष,
सम्यक्त्व धर्म के तुम तजना ।
अष्ट कर्म से रहित होय,
ज्ञानीजन शिवपद को भजना ॥१४॥

शुद्धात्म-श्रद्धान



शुद्धं प्रकाशं शुद्धात्म तत्वं,
समस्त सकल्प विकल्प मुक्तं ।
रत्नत्रयं लंकृत सस्य रूपं,
तत्वार्थं सार्धं बहु भक्ति युक्त ॥१५॥



शुद्धातम का वह प्रकाश है,
नहिं संकल्प विकल्प जहां ।
रत्नत्रय शोभायमान है,
पूर्ण रूप से शुद्ध जहां ॥

तत्वों का श्रद्धान करो,
बहु भक्ति सहित भविजन ज्ञानी ।
श्री गुरु तारण तरण करें -
उपदेश शुद्ध आतम ध्यानी ॥१५॥



* श्रद्धान की सफलता *



जे धर्म लीना गुण चेत नेत्वं,
ते दुःख हीना जिन शुद्ध दृष्टिः।
संप्रोषि तत्वं सोई ज्ञान रूपं,
व्रजंति मोचं चण एक मेत्वं ॥१६॥



धर्मलीन गुण हो चेतन के,
जो जन आराधन करते।
शुद्ध दृष्टि दुख हीन वही नर,
तत्वज्ञान धन को धरते॥

ऐसे भाव हुए जिनके,
वे शीघ्र मोत्त पद पाते हैं।
श्री गुरु तारण तरण धन्य,
यह शुभ उपदेश सुनाते हैं॥१६॥



* सम्यक्त्व-महिमा *



जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व शुद्धं,
माला गुण कंठ हृदय रुलित ।
तत्वार्थ सार्धं च करोति नित्य,
संसार मुक्त शिव सौख्य वीयं ॥१७॥



हृदय कंठ में इस गुण माला—
को जिनने धारण करली ।
भव सागर से पार हुए वे,
उनने शिव रमणी वरली ॥

तत्वमयी श्रद्धान जिन्हों के,
हृदय कंठ में रुलता है ।
उनके लिये मुक्ति मंदिर का,
द्वार शीघ्र ही खुलता है ॥१७॥



❀ ज्ञान गुण-माला ❀



ज्ञानं गुणं माल सु निर्मलेत्वं,
संक्षेप गुथितं तव गुण अनंतं ।
रत्नत्रयं लंकृत विश्व रूपं,
तत्वार्थ सार्थं कथितं जिनेन्द्रं ॥१८॥



ज्ञान गुण मयी निर्मल माला,
का गुंथन संक्षिप्त किया ।
तीन रत्न शोभित हैं इसके,
धारण से हो दिप्त हिया ॥

जैसा कथन जिनेन्द्र देव ने,
किया शुद्ध जिनवाणी में ।
वही कथन श्री गुरु तारण–
स्वामी ने किया सुवाणी में ॥१८॥



* राजा श्रेणिक का प्रश्न *

श्रेणीय पृच्छन्ति श्री वीर नाथ,
माला श्रिय मागत नेह चक्र।
धरणेन्द्र इन्द्रं गन्धर्व जचं,
नर नाह चक्रं विधा धरेत्व ॥१६॥

वीरनाथ के समवशरण में,
राजा श्रेणिक ने बूझा।
भगवन! कहो कौन इस माला-
का धारी होगा दूजा॥

चक्रवर्ति धरणेन्द्र इन्द्र,
गन्धर्व यत्त नरनाथ बड़े।
विद्याधर का समूह देखा,
श्रेणिक विस्मय साथ खड़े ॥१६॥

राजा श्रेणिक के प्रश्न का
—समाधान—



(गाथा नम्बर १६)



तब श्री गौतम स्वामी ने,
राजा श्रेणिक को सम्बोधा ।
क्या सुरनर की विभूति में ही,
तुमने शिव मारग शोधा ॥

हे श्रेणिक! तुमही इस माला,
के अधिकारी हो ज्ञानी ।
चौथेकाल आदि में धारोगे,
तीर्थंकर पद ध्यानी ॥१६॥



* बाह्य विभूतियों की-असारता *



किं दिप्त रत्नं बहु वे अनन्तं,
किं धन अनन्तं बहुभेय भुक्त ।
किं त्यक्त राज्यं वनवास लेत्वं,
किं तत्व वेत्व बहु वे अनंतं ॥२०॥



दीप्त रत्न राशी बहुती इनसे,
क्या काज सफल होगा ।
धन अनंत बहु भांति कहो,
इनसे क्या काज सफल होगा ॥

राज्य छोड़ वनवास लिया,
इससे क्या काम सफल होगा ।
तत्व ज्ञान कर लिया कहो,
इससे क्या काज सफल होगा॥२०॥



❋ सम्यक्त्व-माला ❋



श्री वीरनाथं उक्तं च शुद्धं,
श्रुणु श्रेणि राया माला गुणार्थं।
किं रत्न किं अर्थ किं राज नार्थं,
किं तत्व वेत्वं नवमाल दृष्टं ॥२१॥



वीर नाथ की दिव्य धुनी में,
देखो क्या उपदेश हुआ।
सुन श्रेणिक! माला गुण को,
अब जो तुमको संदेह हुआ ॥

रत्न अर्थ धन राज संपदा,
तप तपने से क्या होगा।
यदि इस माला को नाहिं देखा,
तो सबही निष्फल होगा ॥२१॥



* सम्यक्त्व बिना-बाह्य विभूतियां निष्प्रयोजन हैं *

किं रत्न कार्यं बहुवे अनंत,
किं अर्थ अर्थं नहिं कोपि कार्यं ।
किं राज चक्र किं काम रूप,
किं तत्व वेत्व बिन शुद्ध दृष्टी ॥२२॥

सम्यग्दर्शन नहिं होगा तो,
रत्न अर्थ नहिं काम पड़ें ।
राज चक्र क्या काम रूप भी,
तत्वज्ञान सब नाम बड़े ॥

हे श्रेणिक! अब आत्म तत्व,
का शरणा ही लेना चहिये ।
श्री गुरु कहें सुनो हो प्राणी,
निज पद चित देना चहिये॥२२॥

* सम्यग्दर्शन-रहित-जीव *



जे इन्द्र धरणेन्द्र गन्धर्व जत्तं,
नाना प्रकारं बहुवे अनंतं।
ते नंत प्रकारं बहुभेय जुक्तं,
नवमाल दृष्टं कथितं जिनेन्द्रं ॥२३॥



चक्रवार्ति धरणेन्द्र इन्द्र,
गन्धर्व यत्त नाना भांती।
धन संपदा अनंत इन्हों के,
साथ लगी यह दुख पांती॥

नाहिं देखी सम्यग्दर्शन की,
माला सुखदाई इनने।
श्रेणिक तुमको इस माला का,
होगा लाभ एक छिनमें ॥२३॥



* शुद्ध-मालारोहण *



जे शुद्ध दृष्टी सम्यक्त्व जुक्तं,
जिन उक्त सत्यं तत्त्वार्थ सार्धं ।
आशा भय लोभ स्नेह त्यक्त,
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलित ॥२४॥



सम्यग्दर्शन सहित शुद्ध दृष्टी,
जिनोक्त श्रद्धान धरो।
आशा स्नेह लोभ भय त्यागो,
निजपद की पहिचान करो ॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
उनने इस माला को पहिरी।
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिव दहरी ॥२४॥



* सम्यग्दृष्टि को मोक्ष हो *



जिनस्य उक्तं जे शुद्ध दृष्टी,
सम्यक्त्व धारी वहु गुण समाधिं।
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलितं,
मुक्ते प्रवेशं कथितं जिनेन्द्रं ॥२५॥



जिनेन्द्र वचनानुसार जो हैं,
शुद्ध दृष्टि बहु गुणधारी।
उनने देखी यह गुणमाला,
सुनो भव्य श्रद्धा धारी॥

ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी॥
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिव दहरी॥२५॥



* शुद्ध सम्यक्त्वी *



सम्यक्त्व शुद्धं मिथ्या विरक्त,
लाजं भय गारव जीन त्यक्त ।
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलित,
मुक्तस्य गामी जिनदेव कथितं ॥२६॥



सम्यग्दर्शन से पवित्र हो,
मिथ्या त्याग करो प्राणी ।
लज्जा भय गारव को त्यागो,
माला देखो सुखदानी ॥

हृदय कंठ में रुलन करो तव,
पाओगे तुम शिव रमणी ।
जिनेन्द्र ने यह कहा भव्यजन,
सुनकर पावो शिव श्रयणी ॥२६॥



* रत्नत्रय-धारी *



जे दर्शनं ज्ञान चारित्र शुद्धं,
मिथ्यात्व रागादि असत्यं च त्यक्तं ।
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलितं,
सम्यक्त्व शुद्धं कर्म विमुक्तं ॥२७॥



सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित से,
तुम पवित्र होना ज्ञानी ।
मिथ्या राग असत्य आदि से,
तुम विरक्त होना ध्यानी ॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
उनने यह माला को पहरी ।
निशादिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिव दहरी ॥२७॥



* धर्मध्यान-युक्त भव्य *



पादस्थ पिंडस्थ रूपस्थ चित्त,
रूपा अतीतं ज ध्यान युक्त।
आर्त्तं च रौद्रं मय मान त्यक्तं,
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलितं ॥२८॥



धर्म शुक्ल अरु आर्त रौद्र,
ध्यानों के भेद सुनो भाई।
धर्म शुक्ल अन्तर्गत ही—
है चार और ये सुखदाई॥

है पदस्थ पिंडस्थ रूप,
रूपस्थ तीन तो ये सुनलो।
चौथा रूपातीत ध्यान यह,
इसे ध्यान से तुम गुनलो ॥२८॥



* धर्म ध्यानी *

(गाथा नम्बर २८)

आर्तरौद्र को छोड़ जिन्होंने,
धर्म शुक्ल स्वीकार किया।
इस गुणमाला को उनने ही,
शुद्ध हृदय में धार लिया॥

विशेष इन ध्यानों का जिन-
आगम से ज्ञान करो भाई।
श्री गुरु ने यह कथन किया है,
भविजन को शिव सुखदाई॥२८॥

* सम्यक्त्व-भेद *

आज्ञा सुवेदं उपशम धरेत्वं,
क्षायिक शुद्धं जिन उक्त सार्धं ।
मिथ्या त्रिभेदं मलराग खंड,
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलितं ॥२९॥

आज्ञा, वेदक, उपशम क्षायिक,
यह समिकित के भेद कहे ।
त्रिभेद मिथ्या पचीस मलको,
त्याग, माल, कर माहि गहे ॥

ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी ।
निशादिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिव दहरी ॥२६॥

* जड़ता को त्यागो *

ये चेतना लक्षणो चेत नेत्वं,
अचेतं विनाशी असत्यं च त्यक्तं ।
जिन उक्त सत्यं सु तत्वं प्रकाशं,
ते माल दृष्टं हृदि कंठ रुलितं ॥३०॥

जो शुद्धातम चेतन के,
लक्षण को जान सचेत हुए ।
विनाशीक पद जो असत्य है,
जड़मय जान सचेत हुए ॥

तातें जड़तें भिन्न लखो,
निज आतम को चेतन ज्ञानी ।
देखो गुणमाला को धारो,
रुलन करो मनमें ध्यानी ॥३०॥

* सम्यग्दृष्टि सुखी हो *



ये शुद्ध बुद्धस्य गुण सस्य रूपं,
रागादि दोप मल पुंज त्यक्त।
जे धर्म प्रकाश मुक्ते प्रवेशं,
ते माल दृष्ट हृदि कंठ रुलितं ॥३१॥



शुद्ध बुद्ध गुण स्वरूप जिसने,
ज्ञान रूप पद जान लिया।
राग द्वेष आदिक मल पुंजो,
को उसने सब त्याग दिया॥

जो जन ऐसे धर्म प्रकाशक,
उनने यह माला पहरी।
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पांयगे शिव दहरी ॥३१॥



* इस माला रोहण का प्रताप *

जे सिद्ध नंतं मुक्ते प्रवेशं,
शुद्धं स्वरूपं गुणमाल गुथितं ।
जे कोपि भव्यात्म सम्यक्त्व शुद्धं,
ते यांति मोषं कथितं जिनन्द्रं ॥३२॥

जीव सिद्ध जो हुये अनंतानंत,
मुक्ति पद को पाया ।
शुद्ध स्वरूप भयी गुणमाला,
गुंथन कर शिवपद पाया ॥

जो जन भव्य शुद्ध सम्यग्दर्शन,
को अवश्य धारेंगे ।
प्राप्त करेंगे शिवपद को,
वे जीवों को भी तारेंगे ॥३२॥

* उपसंहार *

(गाथा नम्बर ३२)

ऐसे भाव हुए जिनके,
उनने इस माला को पहरी।
निशदिन रुलन रहे तत्वों की,
वही पायंगे शिव दहरी॥

श्री माला रोहण की भी यह,
भाषा टीका पद्य मयी।
अल्पमती लघु बालक की,
यह प्रथम कृती परिपूर्ण हुई॥३२॥

श्री शुभ तिथि शुभ बेला के,
[illegible] [illegible] [illegible] होय ।
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] सोय ॥
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] सम्पूर्ण ।
पढ़ो पढ़ावो भव्यजन,
करो कर्म को चूर्ण ॥३२॥

— इति श्री माला रोहण —



श्री मालारोहण ।

॥ ॐ ॥ नमः श्री गुरवे नमः ॥ ॐ ॥

श्री १००८ श्री परमगुरु तारण तरण मण्डलाचार्य विरचित

कमल-बत्तीसी

❀ मंगलाचरण ❀

तत्वं च परम तत्वं,
परमप्पा परम भाव दर्सीए।
परम जिन परमेष्ठी,
नमाम्यहं परम देव देवस्य ॥१॥

तत्वों में जो परम तत्व है,
नमस्कार उसको करना।
परमोत्कृष्ट भाव दर्शी,
परमातम पद वंदन करना॥
परम जिनं परमेष्ठी को,
श्री नमस्कार मैं करता हूं।
जो उत्कृष्ट देव देवों के,
उन्हें वंदना करता हूं॥१॥

* जिनवाणी-श्रद्धान *



जिन वयनं सद्दहनं,
कमलं श्री कमल भाव उववन्नं।
अरजक भाव स उत्तं,
रूर्जं समभाव मुक्ति गमनं च ॥२॥



कमल बत्तीसी ग्रन्थ बनाया,
भव्य जीव संबोधन हेत ।
श्री गुरु संबोधन करते हैं,
इस गाथा में आतम हेत ॥

सुनो भव्य जीवो जिन आज्ञा,
भावों को निर्मल करलो।
सम भावों से मुक्ति गमन है,
यह निश्चय मन में धरलो ॥२॥



* सम्यग्ज्ञान-महिमा *



अन्मोय ज्ञान सहावं,
रयन रयन सरूव विमल ज्ञानस्य ।
मिमल विमल सहावं,
ज्ञान अन्मोय सिद्धि सपत्त ॥३॥



ज्ञान मयी शुद्धातम में ही,
नित प्रति आनन्दित होना ।
ज्ञान रत्न के प्रकाश में ही,
निज स्वरूप को तुम जोना ॥

विमल स्वभाव ज्ञान का,
इस में जो जन आनन्दित होते ।
सिद्धि संपदा को पाकर वे,
भव भव के दुख को खोते ॥३॥



* मिथ्यात्व त्याग का उपदेश *



जिनयति मिथ्या भावं,
अनृत असत्य प्रजाव गलियं च ।
गलयाति कुज्ञान स्वभावं,
विलयं कम्मान तिविह जोयेना ॥४॥



मिथ्या भावों को जो जीते,
असत्य पर्जय वुद्धि तजें ।
कुज्ञानों को त्याग भव्य वे,
भेद ज्ञान को नित्य भजें ॥

ऐसे सम्यग्दृष्टि जीव ही,
त्रिविधि कर्म को दूर करें ।
निज गुण संपत्ती को पाकर,
शिव रमणी को शीघ्र वरें ॥४॥



* सम्यग्ज्ञानी का प्रयत्न *



नन्द अनंद रूव,
चेयन आनन्द प्रजाय गलिय च ।
ज्ञानेन ज्ञान अमोयं,
अन्मोयं ज्ञान कम्म गलियं च ॥५॥



नन्द तथा आनन्द रूप वा,
चिदानन्द जिनने पाया ।
उनकी पर्जय बुद्धि दूर हुई,
ज्ञानानन्द सदा भाया ॥

उनके कर्म गले सबही,
धनि धन्य मोक्ष पद को पाया ।
श्री गुरु तारण तरण मंडला-
चारज ने यह दरशाया ॥५॥



* सम्यग्ज्ञानी की कर्म निर्जरा *



कम्म सहावं खिपनं,
उत्पत्ति खिपिय दृष्टि संभावं ।
चेयनि रूव संजुत्तं,
गलियं विलयंति कम्म बंधानं ॥६॥



संचित कर्म खिपाय नया जो,
बंध कर्म का नाहिं करते ।
सम भावों मय दृष्टि जिन्हों की,
निज चेतन अनुभव करते ॥

कर्मों के बंधन ऐसे से,
उनके सबही खुल जाते ।
निकट भव्य वे जांय शीघ्र ही,
क्षण में शिव सुख को पाते ॥६॥



ॐ मनको वश करना ॐ



मन स्वभाव सं खिपन,
मंसारे शरण भाव गिपियेन।
ज्ञान बलेन विशुद्धं,
अन्मोय विमल मुक्ति गमन च ॥७॥



मन का चंचल जो स्वभाव है,
उसको शीघ्र खिपा देना।
सांसारिक पद्धति वर्धक,
भावों को आप मिटा देना॥

ज्ञान बलेन विशुद्ध करो,
मन आनन्दित हे सद्दृष्टी।
मुक्ति गमन का कारण है,
यह भाव धरो सम्यग्दृष्टी॥७॥



* वैराग्य तीन तरह से होता है *



वैराग्यं तिविह उवन्नं,
जन रंजन राग भाव गलियं च।
कल रंजन दोष विमुक्कं,
मन रंजन गारवेण तिक्कं च ॥८॥



तीन तरह उत्पन्न करो,
वैराग्य हृदय में हे ध्यानी।
जन रंजन जो राग भाव है,
उसे दूर कर दो ज्ञानी॥

कल रंजन जो शरीर का है,
दोष उसे त्यागो भाई।
मन रंजन गारव को त्यागो,
यही सीख है सुखदाई ॥८॥



* दर्शन मोह छोड़ो *

दर्शन मोहन्ध विमुक्त,
राग द्वेष च विषय गलिय च।
ममल स्वभाव उवन्नं,
नंत चतुष्टय दृष्टि संदर्शं ॥६॥

दर्शन मोह अंध कर देता,
जीवों को, उसको छोड़ो।
राग द्वेष अर विषय तथा,
क्रोधादिक भावों को तोड़ो ॥

जिनके ऐसा भाव हुआ,
उत्पन्न शुद्ध अन्तर्यामी।
नंत चतुष्टय देख आपमें,
वही हुये शुभ शिव गामी ॥६॥

* सम्यग्ज्ञानी को मोक्ष हो *



ति अर्थ शुद्ध दृष्टं
पंचार्थ पंच ज्ञान परमेष्ठी।
पंचाचार सुचरणं,
सम्यक्त्वं शुद्ध ज्ञान आचरणं ॥१०॥



रत्नत्रय ही शुद्ध अर्थ है,
पंच ज्ञान परमेष्ठि मयी।
पंचाचार विचार शुद्ध,
सम्यक्त्व और सद्ज्ञान मयी॥

ऐसे भाव हुये जिनके,
वे शीघ्र मोक्ष पद पाते हैं।
श्री गुरु तारण तरण मंडला-
चारज यह समझाते हैं॥१०॥



* भव्यजीवों के कर्तव्य *



दर्शन ज्ञान सुचरण,
देव च परम देव शुद्धं च।
गुरुंच परम गुरुवं
धर्मं च परम धर्म सद्भाव ॥११॥



सम्यग्दर्शन तथा ज्ञान चारित्र,
भले धारण करलो।
सच्चे देव गुरू पर भाई,
दृढ़ श्रद्धान पूर्ण करलो॥

परम धर्म जो जैन धर्म है,
जिनेन्द्र ने जिसको गाया।
उसको धारण किया जिन्होंने,
सद्दृष्टी पद को पाया ॥११॥



* केवल ज्ञानी-महिमा *

जिनयं च परम जिनयं,
ज्ञानं पंचामि अक्षरं जोयं।
ज्ञानेन ज्ञान वृद्धं,
विमल सहावेन सिद्धि संपत्तं ॥१२॥

अष्ट कर्म को जीत प्रभूजी,
केवल ज्ञानी पूर्ण हुये।
ज्ञान वृद्ध जो शुद्ध स्वभावी,
असरीरी सुख पूर्ण हुये॥
उनके कर्म गले सबही,
धनि धन्य मोक्ष पद को पाया।
श्री गुरु तारण तरण मंडला-
चारज ने यह दरशाया॥१२॥

* आध्यात्मिक-चिन्तवन *



चिदानन्द　　चिंतवन,
　　चेयन आनन्द सहाउ आनन्द।
कम्म मल पयडि खिपन,
　　विमल सहावेन अन्मोय संयुक्त ॥१३॥



चिदानन्द शुद्धातम पद है,
　　जो अथाह आनन्द मयी।
उसका चिंतन करो भव्यजन,
　　जिससे पावो मोक्ष मही॥

शत ऊपर अड़तालिस प्रकृति,
　　कर्मों की जो दुखदाई।
उन्हें खिपाओ स्वरूप ध्याओ,
　　तव पद पाओ सुखदाई ॥१३॥



* भेद ज्ञानी-सम्यग्दृष्टि *

अप्पा पर पिच्छन्तो,
पर परजाव शल्य मुत्तानं।
ज्ञानं सहावं शुद्धं,
शुद्धं चरणस्य अन्मोय संयुक्तं ॥१४॥

आत्मा पर की पिछान करता,
पर परजाय शल्य से दूर।
ज्ञान स्वभावी शुद्ध आचरण,
सहित तथा जो है सुखपूर॥

ऐसा सम्यक्त्वी जो होवे,
वही मोक्ष पद को पावे।
कृत कृत्य कहावै, निज गुण भावे,
जग में फिर वह नाहिं आवे ॥१४॥

* अब्रह्म-भाव त्यागो *



अवंभ भाव च वक्कं,
विकहा विसनस्य विषय मुक्त च।
ज्ञान सहाव सु समय,
समय सहकार विमल अन्मोय ॥१५॥



ब्रह्म रहित जो वक्र भाव है,
विकथा व्यसन विषय त्यागो।
भेद ज्ञान मय निज स्वभाव है,
सुखमय विमल वहां पागो ॥

ऐसा सम्यक्त्वी जो होवे,
वही मोक्ष पद को पावे।
कृत कृत्य कहावे, निज गुण भावे,
जग में वहुरि न वह आवे ॥१५॥



* जिनवचन-शक्ति *



जिन वयनं च सहावं,
जिनयति मिथ्यात्व कषाय कंमानं ।
अप्पा शुध मप्पानं,
परमप्पा विमल दर्शये शुद्धं ॥१६॥



जिनवर वचन सहाय जिन्हों के,
उनके मिथ्या भाव टरें ।
कषाय त्यागें वे ही जग में,
कर्म पटल संहार करें ॥

शुद्ध करें निज आतम को,
वे परमातम पद के दर्शी ।
उनके पद कमलों को भविजन,
शिव रमणी ने ही पर्शी ॥१६॥



॥ इष्ट-दर्शी ॥



जिन दृष्टि इष्ट समुद्दं,
इष्ट सञ्जोय तिक्त आनिष्टं ।
इष्टं च इष्ट रूवं,
न्यान सहावेन कर्म गलियनं ॥१९॥



इष्ट शुद्ध दृष्टि जिनवर सम,
जिन जीवों ने प्राप्त करी ।
उनको इष्ट मिला उनकी ही,
अनिष्टता मय दृष्टि टरी ॥

इष्ट कहो या अभीष्ट पदको,
उनने प्राप्त किया भाई ।
ज्ञान स्वभाव धार निज में,
कर्मों में खूब विजय पाई ॥१७॥



* सम्यग्ज्ञानी की लगन *



अज्ञानं नहिं दिट्ठं,
ज्ञान सहावेन अन्मोय विमलं चा ।
ज्ञानंतर नहिं दिट्ठं,
पर परजाव दिट्ठि अंतर सहसा ॥१८॥



नाहिं देखै अज्ञान भाव को,
ज्ञान भाव में मगन रहे ।
अंतर नहिं जिनके सुज्ञान में,
अन्तरंग में लगन रहे ॥

पर परजाय बुद्धि नहिं जिनके,
घट में कभी उदय होवै ।
सम्यकवन्त जीव है सोई,
जन्म जरा दुख को खोवै ॥१८॥



*** आत्म चिन्तवन ***



अप्पा अप्प सहावं,
अप्पा शुद्धप्प विमल परमप्पा।
परम सरूवं रूव,
रूवा तिक्तं च विमल ज्ञान च ॥१६॥



निज में निज का स्वभाव देखे,
जो परमातम रूप कहा।
परम स्वरूप रूप है सोई,
विमल ज्ञान मय शुद्ध अहा॥

पुद्गल रूप त्याग करके,
निज में ही दृष्टि लगा लेना।
श्री गुरु का कहना है भाई,
इस पर ध्यान सदा देना ॥१६॥



* भेदज्ञान शिक्षा *



विमलं विमल सरूवं,
ज्ञानं विज्ञान ज्ञान सहकारं ।
जिन उक्तं जिन वयनं,
जिन सहकारेण मुक्ति गमनं च ॥२०॥



परम शुद्ध जो विमल स्वरूपी,
ज्ञानों में विज्ञान धरै ।
जिनवर के शुभ वचन धार वह,
मुक्ति रमा को शीघ्र वरै ।

पुद्गल रूप त्याग करके,
निज में ही दृष्टि लगा लेना ।
श्री गुरु का कहना है भाई,
इस पर ध्यान सदा देना ॥२०॥



* मैत्री आदि-भावना *

पद् काई जीवान,
,कृपा सहकार विमल भावेन।
मतो जीव समाव,
कृपा सहकार विमल कलिष्ट जीवानं ॥२१॥

पृथ्वी जल अग्नी वायू अरु,
वनस्पती त्रस पद् काई।
जीवों पर निर्मल भावों से,
करुणा कृपा करो भाई॥

चार भावनाओं में पहिली,
मैत्रि भावना सुखदाई।
अब आगे मध्यस्थ भावना—
का वर्णन करते भाई ॥२१॥

* माध्यस्थ-भावना *

एकांत विग्रिय दिट्ठं,
मध्यस्थं विमल शुद्ध संभावं ।
शुद्धं सहाव उत्तं,
विमल दिट्ठि च कंम संखिपनं ॥२२॥

हठग्राही एकांत तथा,
विपरीत मार्ग पर जो चलते ।
उन पर भी मध्यस्थ भाव,
धर लीजे कर्म सभी गलते ॥

शुद्ध दृष्टि का विमल भाव यह,
कर्म खिपाने का कारण ।
धारण करलो मित्रो इसको,
कहते हैं श्री गुरु तारण ॥२२॥

* कृपापरत्व-भावना *

सव कलिट्ट जीवान,
अन्मोयं सहमाग दुग्गेय पन।
जे निरोह मंमाव,
संमारे शरण दुस्व पॉयमी ॥२३॥

दुखी जीव को देख दुष्ट जो,
आनन्दित होते मन में।
दुर्गति पात्र विरोध भाव मय
वे फिरते हैं भव वन में॥

ऐसे भाव त्याग दुख दाता,
शुभ भावों को तुम पालो।
दुखियों के दुख में दुखी हो,
उदार भावों को ध्यालो ॥२३॥

* सम्यग्ज्ञान-महिमा *



ज्ञान सहाव सुसमयं,
अन्मोयं विमल ज्ञान सहकारं ।
ज्ञानं ज्ञान सरूवं,
ज्ञानं अन्मोय सिद्धि संपत्तं ॥२४॥



शुद्ध समय यह ज्ञान स्वभावी,
विमल सुक्ख का ले शरणा ।
ज्ञान मयी निज शुद्ध रूप में,
ज्ञानानन्द लखा करना ॥

सिद्धि संपदा मिलती ऐसे,
भावों से निश्चय धरना ।
श्री जिन तारण तरण गुरू का,
यह उपदेश मनन करना ॥२४॥

